शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

# विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

**तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र**

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक १८ : नई दिल्ली : ५-११ अगस्त २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ५१ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी ६२ जसोल में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित सभा प्रतिनिधि सम्मेलन भारी उपस्थिति में सफलतापूर्वक संपन्न हो चुका है। श्रद्धालुओं के आगमन का क्रम निरंतर जारी है। पर्युषण तक यह क्रम अपने चरम पर पहुंच जाएगा, ऐसी संभावना है। पर्युषण का नवान्हिक कार्यक्रम १४ अगस्त से प्रारंभ हो जाएगा। २१ अगस्त को संवत्सरी महापर्व और २२ अगस्त को खमतखामणा का पावन कार्यक्रम समायोजित होगा।

## समझो पापों को-५

**आचार्य महाश्रमण**

आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--**'इच्छा उ आगाससमा अणंतिया।'** इच्छा आकाश के समान अनंत होती है। हमारी दुनिया में सबसे बड़ा कोई पदार्थ है तो वह आकाश है। आकाश से बड़ा कुछ नहीं होता। जो कुछ भी है, वह आकाश में है। जैसे आकाश का कोई ओर-छोर नहीं होता, वैसे ही इच्छाओं का भी अन्त नहीं होता है। वह आगे से आगे बढ़ती जाती है, अपार, अनंत, असीम हो जाती हैं। संस्कृत साहित्य में कहा गया है--

**असंतोषपरा मूढ़ाः संतोषं यान्ति पंडिताः।**
**असंतोषस्य नास्त्यन्तः संतोषः परमं सुखम् ॥**

जो मोहग्रस्त या मूढ़ लोग होते हैं, वे असंतोष में परायण होते हैं, जबकि पंडित लोग, अध्यात्म विद्या से संपन्न लोग संतोष को धारण करते हैं। असंतोष का अन्त नहीं होता, इसलिए संतोष ही परम सुख होता है।

श्रावक के बारह व्रतों में पांचवां व्रत है--इच्छा परिमाण। जो इच्छा अनंत है, असीम है, उसका परिसीमन कर लेना, यानी अपरिग्रह की दिशा में आगे बढ़ना।

अठारह पापों में पांचवां पाप है--परिग्रह। 'मुच्छा परिग्गहो वुत्तो'--मूर्च्छा परिग्रह है। पदार्थों का उपभोग करना एक बात है और उनके प्रति मूर्च्छा या आसक्ति का होना अलग बात है। वास्तव में पदार्थों के प्रति जो आसक्ति होती है, वही परिग्रह है। मनुष्य पदार्थों के उपभोग की सीमा करे और उससे भी बड़ी बात यह कि इच्छा का सीमांकन करे, आसक्ति को निर्मूल करने का प्रयास करे। आसक्ति ही परिग्रह का रूप धारण कर लेती है।

तीन शब्द हैं--महेच्छ, अल्पेच्छ, अनिच्छ। जो पूर्ण रूप से इच्छारहित हो, वह अनिच्छ होता है। कुछ अंशों में आचार्य भिक्षु को अनिच्छ कहा जा सकता है। जब वे स्थानकवासी परम्परा के गुरु रघुनाथजी के पास थे, उनके बारे में ऐसा बताया जाता है कि तब वे अपने गुरु के बड़े कृपापात्र, विश्वासपात्र और वात्सल्यपात्र थे। उस परम्परा में भावी आचार्य के रूप में वे देखे जाते थे। लोगों के मन में कल्पना थी कि आचार्य रघुनाथजी का उत्तराधिकार मुनि भीखणजी को ही मिलेगा। संत भीखणजी जैसे बुद्धिमान

व्यक्ति इस बात से अनभिज्ञ थे, ऐसा भी मुझे नहीं लगता। इसके बावजूद उन्होंने संघ से अभिनिष्क्रमण कर दिया। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उनमें इच्छाओं का कितना अल्पीकरण या परिसीमन था कि उन्होंने आचार्य पद की एषणा नहीं की, आगे आने वाली कठिनाइयों की परवाह भी नहीं की और अभिनिष्क्रमण कर दिया। ऐसा अनिच्छ व्यक्ति कोई-कोई ही हो सकता है।

महेच्छ वह होता है, जिसमें खूब इच्छाएं होती हैं, ज्यादा आसक्ति होती है। अल्पेच्छ वह होता है, जिसमें इच्छाएं कम होती हैं। साधु को अनिच्छ बनना चाहिए। गृहस्थ अनिच्छ न बन सके तो अल्पेच्छ बनने का प्रयास करना चाहिए। गृहस्थ अपनी इच्छाओं का अल्पीकरण करे। लेकिन एक सामान्य आदमी में तो अधिक इच्छाएं भी देखने को मिलती हैं। अवस्था से वृद्ध होने के बावजूद भी कई बार इच्छाएं विराम नहीं लेतीं। संस्कृत में कहा गया है--

**भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता कालो न यातः वयमेव याताः।**
**तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः, तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः॥**

लोग वृद्धावस्था में सोचते हैं, हमने भोगों को नहीं भोगा, अपितु भोगों ने हमें ही भोग लिया। काल क्या बीता, हम स्वयं ही बीत गए। हमसे तप नहीं तपा गया, हम ही तप गए। हम बूढ़े हो गए, किन्तु तृष्णा बूढ़ी नहीं हुई।

परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी फरमाते कि आदमी पहले शराब पीता है, फिर शराब आदमी को पीने लग जाती है। आत्मकल्याण की दृष्टि से इच्छा परिमाण का बड़ा महत्त्व है। जीवन की जितनी अपेक्षा है, उसकी संपूर्ति तो करनी होती है, किन्तु इच्छाओं का विस्तार न हो, इस पर श्रावक को ध्यान देना चाहिए, विचार करना चाहिए।

परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने विसर्जन का सूत्र दिया था। वह भी एक आसक्ति परिसीमन या आसक्ति अल्पीकरण का एक प्रयोग माना जा सकता है। हालांकि आजकल लोग दान में भी विसर्जन शब्द को काम में ले लेते हैं। वस्तुतः विसर्जन होता है या नहीं, यह विचारणीय बात है। अगर वास्तव में इच्छाओं का अल्पीकरण हो तो विसर्जन एक साधना है और आसक्ति को कम करने का एक सशक्त प्रयोग है। इच्छा बढ़ती है तो उसे घटाया भी जा सकता है। वह बढ़ती कैसे है, इस संदर्भ में एक कथा है--

एक बालक किसी संन्यासी के पास गया। संन्यासी ने वात्सल्य भाव से उसका परिचय पूछा। दस-बारह वर्ष के उस लड़के ने कहा--'बाबा, यहीं निकट के गांव का हूं और लावारिश हूं। रहने के लिए घर नहीं, खाने को रोटी नहीं। भीख मांग कर खा लेता हूं और सड़क के किनारे सो जाता हूं। मुझसे ज्यादा दुःखी कोई नहीं होगा।'

संन्यासी ने कहा--'बोलो, तुम्हें क्या चाहिए?'

लड़के ने कहा--'दो दिन से भूखा हूं। रोटी के लिए कुछ पैसे मिल जाएं तो बड़ी कृपा होगी।'

संन्यासी ने कहा--'अपना हाथ इधर करो।' लड़के ने अपना दायां हाथ बाबा की ओर बढ़ाया तो बाबा ने उसकी हथेली पर १ का अंक लिखा और कहा--'आज से तुम्हें १ रुपया प्रतिदिन अपने आप मिल जाया करेगा।'

उसी दिन से उस लड़के को रोज एक रुपया अयाचित रूप से मिल जाता। उससे वह चाय, बिस्कुट आदि खरीद कर खा लेता। इस तरह एक सप्ताह बीत गया। लड़के की एक मुख्य समस्या भूख की कुछ अंशों में हल हो गई थी। वह बाबाजी से मिलने के लिए बेचैन था। संयोग से एक दिन फिर बाबा के दर्शन हुए। उन्होंने पूछा--'एक रुपया तुम्हें प्रतिदिन मिल जाता होगा। अब तो कोई कठिनाई नहीं है?'

लड़का बोला--'एक रुपया मुझे रोज मिल जाता है, लेकिन भर पेट भोजन के लिए वह पर्याप्त नहीं। थोड़ी और कृपा कर दें।' इतना कह कर लड़के ने अपना हाथ बाबा की ओर बढ़ा दिया।

बाबा ने उसकी हथेली पर जहां एक लिखा था, उसके आगे एक शून्य लिख दिया। अब संख्या १ से बढ़कर १० हो गई। बाबा ने कहा--'अब तुम्हें १० रुपये प्रतिदिन मिला करेंगे।' बाबा की जादुई संख्या के अनुरूप लड़के को अब दस रुपये रोज मिल जाते। उनसे वह नाश्ता और भोजन कर लेता। रोटी की समस्या समाहित हो गई थी। लड़का बाबा से मिलने के लिए उत्कंठित हो गया। सप्ताह भर बाद बाबा उसे फिर मिले और पूछा--'अब तो कोई परेशानी नहीं है?' लड़के ने बाबा के चरण पकड़ लिए और कहा--'बाबा, आपने रोटी की समस्या का समाधान तो कर दिया, लेकिन शरीर की सुरक्षा के लिए वस्त्र भी तो चाहिए। ये जीर्ण और फटे-पुराने कपड़े किसी दिन मेरे शरीर से अपने आप उतर जाएंगे। भोजन दिया तो वस्त्र की भी कृपा कर दें।'

बाबा ने उसकी हथेली पर पहले से अंकित १० में एक शून्य की और वृद्धि कर दी। कहा--'अब तुम्हें १०० रुपये रोज मिलेंगे। आशा है इतने से तुम्हारा काम चल जाएगा।' लंबे समय से अभाव झेल रहे उस लड़के ने सात दिन में तरह-तरह के मनपसंद कपड़े खरीद लिए। उसकी कल्पनाओं में पंख लग गए। अब वह आगे के सपने देखने लगा। उसे पता था कि बाबा फिर बड़ी जल्दी मिलेंगे और आशा के अनुरूप एक दिन बाबा मिले तो उसने कहा--'आपने मुझे भोजन, वस्त्र आदि तो दे दिए, लेकिन मैं अभी भी फुटपाथ पर हूं। आप कृपा कर मेरे लिए घर का भी प्रबंध कर दें।'

बाबा ने उसकी हथेली पर अंकित १०० में एक शून्य और बढ़ा दिया। अब उसे प्रतिदिन हजार रुपये मिलने लगे। जल्दी ही उसने एक मकान खरीद लिया। लेकिन उसकी कामनाओं पर अब भी विराम नहीं लगा। कुछ दिन बाद बाबा फिर मिले तो उसने कहा--'मैं व्यापार करना चाहता हूं, लेकिन उसके लिए मोटी पूंजी की आवश्यकता है। आपकी कृपा से जो राशि मिल रही है, उसमें थोड़ी और वृद्धि कर दें।' बाबा ने उसमें एक शून्य और बढ़ा दिया। अब उसे दस हजार प्रतिदिन मिलने लगे। लेकिन धन से कोई कब संतुष्ट हुआ है? कभी घर-परिवार बसाने के नाम पर तो कभी किसी और बहाने उस लड़के ने बाबा से शून्य की वृद्धि कराते हुए संख्या दस लाख तक कर ली। एक दिन बाबा के दर्शन होने पर जब उनकी ओर से प्रश्न हुआ कि अब तो कोई कठिनाई नहीं है ना? तो उस लड़के ने कहा--'महाराज! कठिनाई नहीं, कठिनाइयों का दौर शुरू हो गया है। मैंने सेठ बनकर अपने व्यापार का विस्तार कर लिया, कोठी और बंगले खड़े कर लिए। कभी नंगे पांव सड़कों पर मारा-मारा फिरता था, आज मेरे पास चार-पांच एयरकंडीशन गाड़ियां हैं। लेकिन मन की अशांति बढ़ती जा रही है। भूख-प्यास गायब है और नींद बहुत कम आती है लगता है जल्दी ही किसी बड़ी बीमारी का शिकार बन जाऊंगा।'

बाबा ने कहा--'जब तुम्हारे पास कुछ नहीं था तो तुम इतने दुःखी नहीं थे। जैसे-जैसे तुम्हें साधन सुलभ होते गए, तुम्हारी इच्छाओं ने विस्तार लेना शुरू कर दिया। तुम्हारी उद्दाम लालसा और इच्छा ने तुम्हें इस मुकाम तक पहुंचाया कि अब शांति तुम्हारे जीवन से गायब है। लाओ अपनी हथेली, तुम्हें फिर से शान्त और संतुष्ट बना दूं।' इतना कह कर बाबा ने उसका हाथ अपने हाथ में लिया। उसने सोचा, बाबा शायद एक शून्य की और वृद्धि करेंगे, लेकिन बाबा ने उसकी हथेली पर अंकित संख्या में से अंक १ को मिटा दिया। अब हथेली पर थे कई शून्य, जिनका कोई अर्थ नहीं रह गया था। लड़का बोला--'बाबाजी! आपने यह क्या किया?' बाबा ने कहा--'वत्स! मैं तुम्हारी मांग पूरी करता गया, फिर भी तुम संतुष्ट नहीं हुए और दुःखी बने रहे। मैं तुम्हें सुखी बनाना चाहता हूं। उसके लिए जरूरी है अपनी आकांक्षाएं सीमित करो। याद रखो, सुख और संतुष्टि पदार्थ के अति संग्रह और उसके अति भोग में नहीं, उसके सीमाकरण में है।'

कहा गया है--जितने से आदमी का पेट भर जाए, यानी जीवन की अपेक्षाओं की संपूर्ति हो जाए, उतना ही आदमी का अपना है। उससे ज्यादा जो अपने पास रखता है, वह चोर है और ताड़ित होने का अधिकारी है। इच्छा परिमाण की यह आदर्श स्थिति है कि अपेक्षा से अधिक संग्रह मत करो। परिग्रह

एक ऐसा पाप है, नदी का ऐसा वेग है, जिसमें आदमी बह जाता है। आयारो में कहा गया--**'अमरायइ महासड्ढी'**--अर्थात बहुत आसक्ति वाला आदमी सोचता है कि मैं अमर हूं, मुझे मरना नहीं है। मेरी भी एक दिन मृत्यु होगी, पदार्थासक्त आदमी इस बात को भुला देता है और अमर की तरह आचरण करता है। कोई स्वयं को अमर न माने। अमर तो केवल आत्मा है। शरीर नश्वर और आत्मा अविनश्वर।

इसलिए व्यक्ति पदार्थ में आसक्त न बने और इस नश्वर शरीर से अमर आत्मा के कल्याण का प्रयत्न करे। इसके लिए वह अपनी इच्छाओं का परिसीमन करे और जितना संभव हो सके, परिग्रह के पाप से बचता हुआ अपनी आत्मा को निर्मलता की दिशा में अग्रसर करे।'

•

# परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जसोल में

## सर्वांगीण विकास में सहायक जीवनविज्ञान

**२५ जुलाई।** परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त प्रचारक श्री मुरलीधरजी उपस्थित हुए और पूज्यप्रवर से मार्गदर्शन प्राप्त किया। प्रातःकालीन कार्यक्रम में जीवनविज्ञान अकादमी जैन विश्वभारती, लाडनूं द्वारा जीवनविज्ञान प्रशिक्षक कार्यकर्ता सम्मेलन का समायोजन हुआ। कार्यक्रम का विषय था--'व्यक्तित्व निर्माण का आधार जीवनविज्ञान।' कार्यक्रम के प्रारंभ में मुनि महावीरकुमारजी ने गीत का संगान किया। जीवनविज्ञान प्रभारी शासनश्री मुनि किशनलालजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। जीवनविज्ञान अकादमी के सहसंयोजक श्री सुरेश कोठारी, श्री विक्रम सेठिया एवं जसोल जीवनविज्ञान अकादमी के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द बोहरा ने अपनी भावाभिव्यक्ति की। मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में प्रशिक्षकों और कार्यकर्ताओं को निष्ठा के साथ कार्य करने हेतु प्रेरित किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति के भीतर अनेक तरह के भाव विद्यमान हैं। उसमें कभी ऋजुता तो कभी छलना, कभी हिंसा तो कभी अहिंसा के भावों को देखा जा सकता है। व्यक्ति असत् से सत्य की ओर प्रस्थान करने का लक्ष्य रखे और उसके लिए पुरुषार्थ करे, यह काम्य है। भावात्मक शुद्धि जीवनविज्ञान का केन्द्रीय तत्त्व है।'

पूज्य आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'बाह्य रूप-रंग का अपना महत्त्व होता है, किन्तु मैं उसे ज्यादा महत्त्व नहीं देता हूं। मेरा मानना है बाह्य व्यक्तित्व सुन्दर हो या न हो, आन्तरिक व्यक्तित्व को सुन्दर बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। जीवनविज्ञान सर्वांगीण व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक बन सकता है। शारीरिक, वाचिक, मानसिक और भावात्मक व्यक्तित्व--इन चारों का विकास होने पर सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास होता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'शासनश्री मुनिश्री किशनलालजी स्वामी बड़ी निष्ठा से जीवनविज्ञान के कार्य में दिन-रात लगे रहते हैं। यह कार्य ये बड़ी जिम्मेदारी के साथ करते हैं और कार्यकर्ताओं को भी प्रेरणा देते रहते हैं। प्रबुद्ध व्यक्ति जीवनविज्ञान का प्रशिक्षण प्राप्त कर शिक्षा संस्थानों में अच्छा कार्य कर सकते हैं।'

## गुणवत्ता रहे शिक्षा संस्थानों में

**२६ जुलाई।** प्रातःकालीन कार्यक्रम में तेरापंथ शिक्षण संस्था प्रतिनिधि सम्मेलन का समायोजन हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में मुनि विजयकुमारजी ने गीत का संगान किया। शासनश्री मुनि किशनलालजी ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। श्री सुखराज खारवाल, श्री बैकुंठनाथ पाण्डेय एवं श्री प्रेमचन्दजी ने अपने विचार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'लौकिक दृष्टि से आज अनेक विद्यालय व विश्वविद्यालय देश में चल रहे हैं। जनता में शिक्षा के प्रति आकर्षण भी है। शिक्षा अर्थार्जन का भी एक हेतु बनी हुई है। शिक्षण संस्थानों में गुणवत्ता रहनी चाहिए। शिक्षा का स्तर अच्छा बनाने के लिए योग्य शिक्षकों और अपेक्षित सुविधाओं का होना आवश्यक माना जाता है। इसके साथ यदि सुसंस्कार निर्माण का भी क्रम चलता रहे तो विद्यालय शत-प्रतिशत सफल बन सकता है।'

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'तेरापंथ समाज के द्वारा भी अनेक शिक्षण संस्थान संचालित हैं। अनेक आवासीय विद्यालय भी समाज से संबद्ध हैं। वहां जैन विद्या तथा जीवनविज्ञान का अध्ययन-अध्यापन होना चाहिए। वहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों को नमस्कार महामंत्र सिखाया जाना चाहिए। पर्युषण के दौरान भगवान महावीर, जैन धर्म और उसके सिद्धान्तों की अवगति दी जाए, यह अपेक्षित है। तेरापंथ समाज से संबद्ध संस्थानों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थी श्रुतसंपन्न और शीलसंपन्न विद्यार्थी के रूप में स्वयं का निर्माण करते हुए समाज और राष्ट्र के नैतिक उत्थान में सहायक बनें।'

अपने प्रवचन के उपरान्त आचार्यप्रवर ने 'डालिम चरित्र' आख्यान का वाचन किया। मुनि जिनेशकुमारजी ने तपस्या के संदर्भ में लोगों को प्रेरणा दी। चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री श्री शांतिलाल भंसाली ने आभार ज्ञापित किया।

**२७ जुलाई।** प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में ऋजुता को आत्मसात् करने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर ने प्रवचन के पश्चात सरस शैली में 'डालिम चरित्र' का वाचन किया।

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ। तेरापंथ कन्यामंडल, जसोल द्वारा चौबीसी के शान्ति जिनस्तवन का संगान किया गया। सैंथिया से समागत संघ की ओर से तेरापंथ सभाध्यक्ष श्री तिलोकचन्द भूरा ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। सैंथिया महिला मण्डल की बहनों ने गीत प्रस्तुत किया।

मुमुक्षु कुणाल (समदड़ी), मुमुक्षु ख्वाहिश (मुम्बई), मुमुक्षु धीरज (बालोतरा) द्वारा दीक्षा प्रदान करने की प्रार्थना पर पूज्यवर ने अनुग्रह करते हुए तीनों मुमुक्षुओं को मुनि प्रतिक्रमण सीखने का आदेश प्रदान किया।

आज मध्याह्न में राजस्थान पुलिस के एडीशनल डी.जी. श्री राजीव दासोत ने सपरिवार आचार्यवर के दर्शन किए और विविध विषयों पर पथदर्शन प्राप्त किया।

## तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन का शुभारंभ

**२८ जुलाई।** परम पावन आचार्यवर की मंगल सन्निधि एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में त्रिदिवसीय तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। पूज्यप्रवर के मंगल मंत्रोच्चार से प्रारब्ध उद्‌घाटन सत्र में तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने सम्मेलन के शुभारंभ की विधिवत घोषणा करते हुए श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी द्वारा रचित और पूज्यप्रवर द्वारा तेरापंथी सभा गीत के रूप में स्वीकृत 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत को आकर्षक प्रस्तुति दी गई। चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री गौतमचन्द सालेचा तथा स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री खूबचन्द भंसाली ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू तथा प्रधान न्यासी श्री कमल दूगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। महासभा के उपाध्यक्ष और सम्मेलन के संयोजक श्री विनोद बैद ने सम्मेलन की रूपरेखा प्रस्तुत की। महासभा प्रभारी मुनि विश्रुतकुमारजी ने अपने विचार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपना पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा--'हमारी दृष्टि में तेरापंथी सभाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये तेरापंथ समाज की विशिष्ट संस्थाएं हैं। सभाओं का पथदर्शन करने

वाली संस्था है तेरापंथी महासभा। यह तेरापंथ समाज की उच्चकोटि की संस्था है। इस त्रिदिवसीय सम्मेलन में खूब अच्छा चिंतन-मंथन चले और सभा प्रतिनिधियों को सुन्दर विचार मिलें, उन्हें खुराक मिले। वे अपने क्षेत्रों में कार्य करने की दृष्टि से ज्यादा सक्षम बन सकें, ऐसी सामग्री इस सम्मेलन में प्राप्त हो तो कार्यकर्ताओं का इस सम्मेलन में भाग लेना अधिक सार्थक हो सकेगा।' कार्यक्रम का संयोजन महासभा के सहमंत्री श्री भूपेन्द्रकुमार मूथा ने किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में तेरापंथ कन्यामंडल, जसोल द्वारा चौबीसी के भगवान कुन्थुनाथ स्तवन का संगान किया गया। मुनि विजयकुमारजी ने गीत का संगान किया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ। तेयुप जसोल के अध्यक्ष श्री रमेश भंसाली ने जैन विद्या कार्यशाला की परीक्षा का परिणाम घोषित किया। श्री कमल बैद, लाडनूं ने गीत का संगान किया। श्री संदीप बरड़िया ने गीत प्रस्तुत करते हुए श्री विमल नाहटा के साथ अपनी सीडी 'भीखणजी रो नाम आठूं याम ध्यावां' लोकार्पित की।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में समागत प्रतिनिधियों को पावन पाथेय प्रदान किया। वह पाथेय इसी अंक में बिन्दुरूप में प्रकाशित हैं। प्रवचन के पश्चात आचार्यवर ने 'डालिम चरित्र' का वाचन किया। टापरा के श्रावक समाज की प्रार्थना पर पूज्यवर ने वहां माघ शुक्ला पंचमी (बसंत पंचमी) तदनुसार १५ फरवरी २०१३ को दीक्षा समारोह करने की घोषणा की।

## प्रधानाचार्य वाक्पीठ का समायोजन

आज मध्याह्न में परम श्रद्धेय आचार्यवर की मंगल सन्निधि में अणुव्रत समिति, जसोल द्वारा प्रधानाचार्य वाक्पीठ का समायोजन हुआ। 'शिक्षा जगत और अणुव्रत' इस विषय पर आयोजित इस कार्यक्रम में संभागियों को पूज्यवर का पावन संबोध प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित बाड़मेर के जिला शिक्षाधिकारी (प्राथमिक) श्री पृथ्वीराज दवे ने अपने भावोद्गार व्यक्त किए।

संगोष्ठी में आगम मनीषी मुनि महेन्द्रकुमारजी, शासनश्री मुनि किशनलालजी, मुनि उदितकुमारजी, मुनि जंबूकुमारजी (मिंजूर) के वक्तव्य हुए। अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष श्री बाबूलाल गोलछा, राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के कार्याध्यक्ष श्री भूपतराज कोठारी, क्षेत्रीय प्रभारी श्री ओम बांठिया, वाक्पीठ के अध्यक्ष श्री पुखराज, सचिव श्री महेन्द्र दवे एवं श्री बजरंग जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। संगोष्ठी में बाड़मेर जिले की चार तहसीलों (बालोतरा, सिवाणा, सिणधरी, बायतू) के १५६ प्राचार्य संभागी बने।

**२६ जुलाई।** सभा प्रतिनिधि सम्मेलन का दूसरा दिन। आगम मनीषी मुनि महेन्द्रकुमारजी एवं समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने 'धर्मसंघ के प्रति हमारा दायित्व' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का इस अवसर पर प्रेरणादायी प्रवचन हुआ। पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा लिखित पुस्तक 'अदृश्य हो गया महासूर्य' मुनि विश्रुतकुमारजी ने आचार्यवर को भेंट की। इसका संपादन साध्वी सुमतिप्रभाजी ने किया है। पुस्तक के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'यह एक लघु पुस्तिका है। आचार्य महाप्रज्ञ के अंतिम दिन व रात तक की बात को इसमें उल्लिखित करने का प्रयास किया है। गुरुदेव का जीवन महान था, उससे हमें सदैव प्रेरणा प्राप्त होती रहे।'

'रात्रि भोजन महापाप है' पुस्तक श्री मूलचन्द गौतमचन्द सालेचा परिवार की ओर से भेंट की गई। कवि सुधीर कोठारी (पुणे) ने अपना कविता संग्रह 'आस्था के पल' भेंट की। मासखमण तप करने वाली बहन श्रीमती संतोष डोसी चोपड़ा की अनुमोदना में सुहानी डोसी और परिजनों ने गीत प्रस्तुत किया। मासखमण तप करने वाली दूसरी बहन श्रीमती कमला संकलेचा के सम्मान में श्री मुकेश संकलेचा एवं मीना संकलेचा ने अपने उद्गार व्यक्त किए। बालोतरा की श्रीमती आशा गोलेच्छा ने अट्ठाईस की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। शासनश्री मुनि रवीन्द्रकुमारजी की प्रेरणा से गोगुन्दा में भरे गए ७७ बारहव्रतधारकों

की सूची श्री नेमीचन्द सुराणा तथा साध्वी रतनश्रीजी (लाडनूं) की प्रेरणा से छोटीखाटू चोखले में भरे गए १८५ बारहव्रतधारियों की सूची सभा के मंत्री श्री ताराचन्द धाड़ीवाल ने भेंट की। जैविभा के सहमंत्री श्री अरविन्द गोठी ने जैविभा द्वारा दिए जाने वाले अनेक पुरस्कारों के लिए चयनित विभिन्न व्यक्तियों एवं संस्थानों के नामों की घोषणा की। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

मध्याह्न में कल्याण परिषद की पांचवीं संगोष्ठी आचार्यवर की सन्निधि में संपन्न हुई। मध्याह्न में ही तेयुप द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुनि दिनेशकुमारजी ने अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया।

## व्यक्तित्व निर्माण की संस्था है तेरापंथी महासभा

**३० जुलाई।** प्रेरणा सत्र के रूप में आयोजित सम्मेलन का तीसरा और अन्तिम दिन। श्री प्रकाश डागलिया (सूरत) ने गीत का संगान किया। महासभा के महामंत्री श्री विनोद चोरड़िया ने अपने विचारों को प्रस्तुति दी। अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने अपने वक्तव्य में महासभा की विभिन्न प्रवृत्तियों की चर्चा करते हुए दक्षिण कोलकाता को 'श्रेष्ठ सभा' सूरत को विशिष्ट सभा एवं गदग (कर्नाटक) को दूसरी विशिष्ट सभा के रूप में चयनित किए जाने की घोषणा की। महासभा के प्रभारी मुनि विश्रुतकुमारजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'तेरापंथ की संगठनमूलक संस्थाओं में एक है महासभा। यह व्यक्तित्त्व निर्माण की संस्था है। ज्ञानशाला का संचालन इसका महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। बच्चों के संस्कारित होने का मतलब है धर्म का विकास होना। यह उल्लेखनीय बात है कि ज्ञानशाला में पढ़ने वाले बाद में प्रशिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। व्यक्तित्व निर्माण की दृष्टि से दूसरा महत्त्वपूर्ण उपक्रम है उपासक श्रेणी और तीसरा उपक्रम है मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना। महासभा व्यक्तित्व निर्माण और समाज कल्याण की दिशा में प्रगति करती रहे।'

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'तेरापंथ धर्मसंघ बहुआयामी धर्मसंघ है। महासभा इसकी शीर्ष संस्था है जो एक साथ कई गतिविधियों का संचालन कर रही है। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर शासन के नियंता हैं, जिनके द्वारा महासभा को समय-समय पर सम्यक् मार्गदर्शन मिलता रहता है। हमारे संघ में गुरुदृष्टि को सर्वोपरि माना गया है। गुरु का निर्देश श्रावक समाज के लिए अध्यादेश की तरह होता है। इस संदर्भ में तर्क का कोई स्थान नहीं है। आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष सामने है। इस संदर्भ में आचार्यवर द्वारा अभिव्यक्त संकल्प को सफल बनाने में धर्मसंघ का हर सदस्य योगभूत बने।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'अधिवेशन या सम्मेलन एक आईना होता है, जिसमें विगत वर्ष के प्रतिबिंबों को देखा जा सकता है। इसमें विकास और ह्रास की समीक्षा की जाती है, भावी योजना का रेखाचित्र बनाया जाता है। सम्मेलन में संभागी प्रतिनिधि अपना लक्ष्य निर्धारित करें और अपना आत्मालोचन करें, इससे संयम की चेतना पुष्ट होगी और देव, गुरु, धर्म के प्रति आस्था प्रगाढ़ बनेगी। धर्मसंघ की प्रभावना हेतु श्रावक समाज जागरूक रहे तथा अपनी जीवनशैली को स्वस्थ बनाए।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर का इस अवसर पर प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ। आचार्यप्रवर ने प्रवचन के मध्य प्रसंगवश कहा--'मुनि विश्रुत को हमने महासभा का आध्यात्मिक प्रभारी बनाया है। ये छोटे लगते हैं और छोटे ही हैं। आचार्य महाप्रज्ञ ने इन्हें साहित्य समिति का सदस्य बनाया था। मुनि विश्रुत लगन, निष्ठा व सूझबूझ वाला दिमागी मुनि है। ये महासभा के काम में समय लगाते हैं, अच्छे ढंग से काम करते हैं, अच्छा ध्यान दे रहे हैं। यदा-कदा मेरे पास आते रहते हैं। काम करते-करते विकास होता है। मुनि विश्रुत इसी तरह अच्छा काम करते रहें।' मंगलपाठ सुनने हेतु प्रस्तुत रतनगढ़ के दूगड़ परिवार के सदस्यों को देखकर पूज्यप्रवर ने कहा--'बुधमलजी दूगड़ का परिवार सेवा में लगा हुआ है। इनके तीनों

पुत्र (सुरेन्द्र, तुलसी, कमल) अच्छी सेवा करते हैं। बाइयों का तत्त्वज्ञान में अच्छा अभ्यास है।' महासभा के उपाध्यक्ष एवं सम्मेलन संयोजक श्री विनोद बैद तथा चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के मंत्री श्री शांतिलाल भंसाली ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन महासभा के कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र बोरड़ ने किया।

जैन विश्वभारती, लाडनूं द्वारा विगत कई वर्षों से आगम अध्ययन एवं स्वाध्याय की अभिरुचि जागरण हेतु 'आगम मंथन प्रतियोगिता' आयोजित होती रही है। इस क्रम में इस वर्ष 'सूयगडो' पर आधारित प्रतियोगिता प्रारंभ हो रही है। कार्यक्रम में समण संस्कृति संकाय के विभागाध्यक्ष श्री रतनलाल चोपड़ा ने सूयगडो ग्रंथ प्रश्न पुस्तिका पूज्यवर को भेंट की। आज उद्योग विभाग के उपसचिव डॉ. सोहनलाल यादव, राजस्थान हैंडलूम कारपोरेशन अजमेर के प्रबंधक श्री राजेन्द्र मित्तल, जोधपुर के प्रबंधक श्री ओमप्रकाश श्रीवास्तव, राजस्थान उच्च न्यायालय के एडवोकेट श्री हरीश माथुर ने आचार्यवर के दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

## सन् २०१३ की अक्षयतृतीया वाव में करने की घोषणा

आगामी अक्षयतृतीया की आयोजना वाव में हो, इस प्रार्थना के साथ वाव के श्रावक श्रीचरणों में पहुंचे। वाव पथक तेरापंथ समाज के सहसंयोजक प्रवीणभाई मेहता ने अपने विचार रखे। युवकों ने भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने वाव के श्रावकों की प्रार्थना के संदर्भ में कहा--'कच्छ की यात्रा करनी है। वहां से लौटते समय द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव एवं स्वास्थ्य की अनुकूलता रहती है तो सन २०१३ की अक्षयतृतीया वाव में करने का भाव है। संघ में वाव क्षेत्र का अच्छा योगदान है। कठिन समय में इस क्षेत्र के श्रावकों ने बड़ी दृढ़ता का परिचय दिया है। हमारी इच्छा हुई कि हमें वाव जाना चाहिए। वहां के श्रावक समाज में अच्छा उत्साह है। यात्रा में होली का समय भी आएगा। होली का प्रवास कच्छ में करने का भाव है। यात्रा के दौरान माडका, मावसरी, भाभर का स्पर्श करने का भाव है।' आचार्यवर की इस घोषणा से प्रफुल्लित होकर वाव एवं कच्छ क्षेत्र के श्रद्धालुओं ने जयनाद किया।

## सभा प्रतिनिधियों को परमपूज्य का पावन पाथेय

त्रिदिवसीय सभा प्रतिनिधि सम्मेलन में परमाराध्य आचार्यवर ने जो पावन पाथेय प्रदान किया, वह महासभा एवं सभी सभाओं के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के लिए एक बोधपाठ बन गया। सबके लिए यह कल्याणी गुरुवाणी सदैव दिशादर्शक की भूमिका निभाती रहेगी। पूज्यवर के मार्गदर्शक बिन्दु अग्रांकित हैं--

- जैन वाङ्मय में चतुर्विध धर्मसंघ की बात आती है। उसमें साधु-साध्वियां हैं और श्रावक-श्राविकाएं भी हैं। साधु-साध्वियों का तो विशिष्ट महत्त्व होता ही है, श्रावक-श्राविकाओं का भी बहुत महत्त्व होता है। श्रावक बनने का अर्थ है सामान्य जनता से ऊपर उठ जाना। श्रावक तो एक पदवी मानी गई है। यह एक गौरवास्पद स्थिति होती है। श्रावक की तीन अर्हताएं बताई गई हैं--
  १. श्रावक में श्रद्धा होनी चाहिए।
  २. श्रावक में विवेक होना चाहिए।
  ३. श्रावक में त्याग-प्रत्याख्यान होना चाहिए।
- श्रद्धा अपने आप में एक बड़ा गुण है। श्रावक की श्रद्धा का सूत्र है कि अर्हत मेरे देव हैं। शुद्ध साधु मेरे गुरु हैं और वीतराग द्वारा प्रवेदित तत्त्व मेरा धर्म है। इस प्रकार श्रावक की श्रद्धा का मूल आधार वीतरागता होती है। क्योंकि अर्हत वीतराग हैं, साधु वीतराग अथवा वीतरागता के

साधक हैं, धर्म भी वीतरागता का है और वीतराग द्वारा प्रज्ञप्त है, इसलिए श्रावक वीतरागता के प्रति आस्थावान रहे। लौकिक देवी-देवताओं की आशातना, अवहेलना और अपमान नहीं करना चाहिए। किन्तु अपनी धार्मिक श्रद्धा तो अपने देव, गुरु और धर्म में ही रहनी चाहिए।

- श्रद्धा एक प्रकार की गाय है। वह ज्ञान के खूंटे से बंधी रहती है, तब तक वह एक स्थान पर बंधी व टिकी रह सकती है, दूर नहीं जा सकती। ज्ञान के खूंटे के बिना श्रद्धा स्थिर नहीं रहती। ज्ञानयुक्त श्रद्धा के बल पर श्रावक बाह्य आकर्षण से बचने का प्रयास करता है। वस्तुतः श्रद्धा का आधार ज्ञान होना चाहिए।
- श्रावक में विवेकशीलता बहुत आवश्यक है। सभी पदाधिकारी व कार्यकर्ता यह ध्यान रखें कि कहीं फिजूलखर्ची न हो। हर स्थिति में सादगी रहे। किसी भी आयोजन, अधिवेशन, सम्मेलन आदि में यह देखें कि इसमें मितव्ययिता है या नहीं? जितना खर्च टाला जा सकता है, उसे टालना चाहिए। कार्यक्रमों के लिए प्रायोजक मिल सकते हैं, पर अनपेक्षित खर्च क्यों हो? सम्मेलन आदि की किट ज्यादा खर्चीली न हो। प्रायोजक अपना सहयोग व सहभागिता देते हैं तो उनके नाम के स्थान-स्थान पर बैनर लगाने की क्या जरूरत है? नाम की भावना से पाप कर्म का बंध होता है। प्रायोजक का रिपोर्ट में नाम दिया, उल्लेख कर दिया, सम्मान कर दिया, यह एक अलग बात है। संस्थाओं की हर प्रवृत्ति में संयम परिलक्षित हो। संस्था के लिए पैसा पवित्र वस्तु होती है। उसका अपव्यय व दुरुपयोग करना पैसे का अपमान है। संस्थाएं नैतिकता के प्रति जागरूक रहें।
- श्रावक में श्रद्धा व विवेक प्रशस्य हो, इसके साथ त्याग-संयम का विकास भी हो। जो बारहव्रत को स्वीकारता है, उसके जीवन में त्याग-प्रत्याख्यान का अच्छा समावेश हो जाता है। श्रावक ज्ञ परिज्ञा से बारह व्रत को समझने का प्रयास करे और प्रत्याख्यान परिज्ञा से त्याग की चेतना को जगाए।
- रात्रि भोजन का त्याग रखना चाहिए। अगर चौविहार न हो सके तो तिविहार तो करें। हमारे छोटे-छोटे साधु-साध्वियां चौविहार करते हैं। यह सही है कि उनका जीवन उस क्रम में ढला हुआ है। रात्रि भोजन का त्याग प्रतिदिन न हो सके तो चतुर्मास में कर लें। व्यावसायिक व्यस्तता के कारण ज्यादा न हो सके तो माह में चार-पांच दिन करें। कभी बिना त्याग किए भी अभ्यास रूप में चौविहार करने का लक्ष्य बनाएं। इससे श्रावकत्व में निखार आता है।
- श्रावक खाद्य संयम का अभ्यास करे। इससे अहिंसा की साधना प्रशस्त होगी तो अव्रत भी न्यून होगा। सात दुर्व्यसनों का त्याग करें। व्यापारी अपना गल्ला पैसे से भरता है। श्रावक अपने त्याग से आत्मा के खजाने को, पेटी को भरने का प्रयास करे। आयुवृद्धि के साथ सबका रुझान त्याग व उपासना की दिशा में हो। कितने-कितने लोग डेरा लगाकर उपासना-सेवा करते हैं, लंबे समय तक सेवा करते हैं। व्यवसाय से मुक्त बनकर सेवा करना अच्छी बात है। पांच-सात दिन या जितना भी समय निकाल सकें, गुरुकुलवास में सेवा करें। यह एक स्वस्थ उपक्रम है।
- छोटे-छोटे बच्चे साधु बन जाते हैं। साधु बनने की भावना सदैव रहनी चाहिए। श्रावक यह भावना करे कि जीवन में हम वह दिन देखें, जब सामायिक चारित्र-सर्व सावद्य योग का त्याग करूं। यह श्रावक का एक मनोरथ भी है। जहां चाह, वहां राह के अनुसार भावना सफलीभूत हो सकती है। भावना अच्छी है और बलवती है तो इस जन्म में फलीभूत हो सकती है, अन्यथा अगले जन्म में भी वह साकार हो सकती है। जीवन में त्याग-संयम का विकास होता रहे।
- वर्तमान में ज्ञान प्राप्ति की सुलभता है। आज पुस्तक, कम्प्यूटर व इंटरनेट की सुविधा है। हजारों वर्ष पहले हमारे पूर्वजों को संभवतः इतनी सुविधा नहीं थी। हमारा विशाल आगम वाङ्मय है। कई आगम अनुवाद, टिप्पण सहित प्रकाशित हो चुके हैं। आगम संपादन कार्य के अंतर्गत दसवेआलियं

व उत्तरज्झयणाणि का अनुवाद स्वतंत्र रूप से प्रकाश में आ चुका है। अब सबसे बड़े आगम भगवती का अनुवादात्मक संस्करण भी तैयार हो रहा है। श्रावक समाज आगमों के अनुवाद व टिप्पण पढ़ें। समाज में ज्ञान की दृष्टि से प्रतिभाशाली व्यक्ति मिल सकेंगे। वे स्वाध्याय में यथासंभव अपने समय का नियोजन करते रहें।

- तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में भी श्रावक-श्राविकाएं गति करते रहें। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल इस दिशा में अच्छा उपक्रम चला रहा है। तत्त्वज्ञान व तेरापंथ दर्शन का कोर्स चलाया जा रहा है। उसमें आगे बढ़ें। मैं इसे ज्ञान प्राप्ति की सम्यक् विधा मानता हूं।
- जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय, लाडनूं) जैन विद्या का प्रचार-प्रसार नियमित व पत्राचार के माध्यम से कर रहा है। जैविभा का समण संस्कृति संकाय भी जैन विद्या परीक्षा का नियोजन करता है। इस संदर्भ में साहित्य भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ की पुस्तक 'जैन दर्शन : मनन और मीमांसा' को आद्योपान्त समीचीन रूप से पढ़ लें तो जैनदर्शन की अच्छी अवगति हो सकती है।
- बच्चों के लिए ज्ञानशाला का सुन्दर उपक्रम बना हुआ है। महासभा की इस गतिविधि से कितने-कितने बच्चे लाभान्वित हुए हैं और हो रहे हैं। यह एक बहुत सुन्दर क्रम बना है। बच्चों को सिखाने के लिए प्रशिक्षकों को ट्रेनिंग दी जाती है। इन प्रशिक्षकों को पढ़ाने के लिए अब ज्ञानशाला प्राध्यापक प्रशिक्षण का भी सुन्दर उपक्रम शुरू हो गया है। ज्ञानशाला के प्रति सभाएं जागरूक रहें।
- उपासक श्रेणी का भी अच्छा विकास हुआ है। उपासक, उपासिकाएं पर्युषण आराधना हेतु विभिन्न क्षेत्रों में जाते हैं। उनमें ज्ञान व वक्तृत्व का विकास हुआ है। यह एक सेवादायिनी श्रेणी है।
- आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी के संदर्भ में हमने सौ मुनि दीक्षा का टार्गेट बनाया है। मैं इसे सबसे बड़ा व ठोस कार्य मानता हूं। अन्य कार्यक्रम इसके बाद हैं। इसमें साधु-साध्वियों और समणश्रेणी का योगदान है तो श्रावक समाज का भी योगदान रहे। यह अभियान सघन रूप में चले। इस सिवांची-मालाणी क्षेत्र में इस प्रयास की निष्पत्ति सामने आ रही है।
- जैन वाङ्मय का उद्घोष है--'चएज्ज देहं न हु धम्मसासणं'--अर्थात शरीर को भले छोड़ना पड़े, किन्तु धर्मशासन को न छोड़ें। कभी-कभी छोटी-मोटी तुच्छ बातों को लेकर आस्था में कमी आ सकती है, जैसे--मैं दर्शन करने गया और साधु-साध्वियों ने जिकारा भी नहीं दिया। इसलिए अब मैं दर्शन करने नहीं जाऊंगा। इतनी छोटी-सी बात के आधार पर दर्शन करने नहीं जाना विवेक अथवा समझ की कमी ही कही जा सकती है। यह एक प्रकार की दुर्बलता है। इस प्रकार की छोटी-मोटी बातों को लेकर आस्था में कमी नहीं आनी चाहिए। जिस धर्मसंघ से व्यक्ति जुड़ा हुआ है, जिसे सम्यक् मानकर स्वीकार किया है और सम्यक् मान भी रहा है, उसके प्रति सम्मान और श्रद्धा का भाव रहना चाहिए।
- हमारे धर्मसंघ में शासन को महत्त्व दिया गया है। शासन मुख्य और बड़ा होता है, व्यक्ति गौण होता है। संघहित मुख्य है, व्यक्तिहित गौण है। संघहित के लिए व्यक्ति को व्यक्तिगत हित का परित्याग कर देना चाहिए। संगठन की मर्यादा और व्यवस्था के प्रति निष्ठा रहनी चाहिए।
- तेरापंथ धर्मसंघ आचार्यकेन्द्रित धर्मसंघ है। यहां आचार्य सर्वोपरि व शीर्ष होते हैं। सबके दर्शन, प्रतीक्षा व आतुरता के केन्द्र होते हैं। आयारो में समागत सूत्र 'एगप्पमुहे'--आत्मा की ओर अभिमुख की भांति सब आचार्याभिमुख होने चाहिए। उनके इंगित व निर्देश के अनुरूप चलने को जागरूक रहना चाहिए। श्रावक-श्राविकाओं में भी आचार्यमुखता दृष्टिगत होती है।
- तेरापंथ धर्मसंघ में आज्ञा को सर्वोपरि माना गया है। गुरु आज्ञा के विपरीत कोई कार्य न हो। साधु-साध्वियों के गुरु आज्ञा को लांघने का परित्याग होता है। वे गुरु की आज्ञा का आलंबन

लेकर सुदूर क्षेत्रों में चले जाते हैं। गुरु के आदेशानुसार विहार-चतुर्मास करते हैं। हमारा श्रावक समाज भी आध्यात्मिक संदर्भों में आचार्यों की निश्रा में है। श्रावक-श्राविकाओं को भी आचार्यों से पथदर्शन प्राप्त होता है। हमारे श्रावक समाज में गुरु इंगित के प्रति बहुत समर्पण का भाव है। जहां गुरु की दृष्टि, वहां श्रावक समाज समर्पित रहता है। ये संस्कार और परिपुष्ट हों तथा आने वाली पीढ़ियों में भी संक्रान्त होते रहें।

- जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा तेरापंथ समाज की मातृ स्थानीय संस्था है, मां है, बहुत महत्त्वपूर्ण संस्था है। अब तो यह वयोवृद्ध बन गई है, सौ वर्ष के निकट पहुंच गई है। सौ वर्षों का आयुष्य अपने आप में बहुत बड़ा होता है। पवित्र कार्य करने वाली संस्था का आयुष्य और लंबा चलता रहे। हमारे धर्मसंघ की संस्थाओं में महासभा सिरमौर संस्था है, प्रधान संस्था है। मैंने पिछले वर्षों में देखा, महासभा बहुत जागरूक है। समाज की अनेक गतिविधियां इस संस्था के द्वारा संचालित हो रही हैं। कार्यकर्ताओं में उत्साह, सक्रियता, लगन और समर्पण का भाव देखने को मिलता है। पवित्र निरवद्य आध्यात्मिक गतिविधियों के प्रति समर्पण का भाव बना रहे।
- महासभा केवल आध्यात्मिक गतिविधियां ही संचालित नहीं कर रही है, वह सामाजिक कल्याण पर भी ध्यान देती है। समाज की संस्था है, इसलिए समाज के हितों का भी ध्यान रखती है। यह लौकिक कार्य होता है और सामाजिक दृष्टि से उसका भी अपना महत्त्व होता है। अनेक दृष्टियों से यह संस्था महत्त्वपूर्ण संगठन है और अपने दायित्व के प्रति जागरूक है।
- महासभा के पदाधिकारी और कार्यकर्ता यात्राएं करते हैं, जगह-जगह जाते हैं। उनके वहां जाने से उस क्षेत्र में श्रावकों को संबल मिलता होगा कि महासभा के लोग हमें संभालने आए हैं। जैसे मां कभी अपने पुत्रों के पास जाती है तो पुत्रों को भी कितनी खुशी होती होगी। साधु-साध्वियां कहीं न भी जा सकें, किन्तु महासभा के पदाधिकारी और उससे जुड़े कार्यकर्ता अपने पार्श्ववर्ती क्षेत्रों की आध्यात्मिक संभाल करते रहें।
- महासभा ने आंकड़े दिखाए। मुझे अच्छा लगा कि सभाओं की प्रतिलेखना हो रही है। समाज की प्रतिलेखना करने से जागृति आती है। सभाओं को प्रोत्साहित किया जाता है। प्रोत्साहन से कार्य करने का उत्साह पुष्ट होता है, दूसरों को भी प्रेरणा मिलती है। समाज में जागृति आई है, यह जागरूकता वृद्धिंगत होती रहे।
- महासभा के पदाधिकारी व कार्यकर्ता अर्थसंपन्न हैं, प्रतिष्ठित हैं, अच्छे शिक्षित हैं। अपने-अपने क्षेत्र में बड़ी कंपनियां चलाते हैं। बहुत से लोग इनके नीचे काम करते हैं, उन्हें ये आदेश-निर्देश देते हैं। जब ये यहां आते हैं तो अत्यन्त विनीत बनकर बात करते हैं, सेवा करते हैं। यह उनकी निष्ठा का परिचायक है। उनका यह निष्ठाभाव प्रवर्धमान रहे।
- महासभा द्वारा आयोजित इस सभा प्रतिनिधि सम्मेलन में सभाओं का परस्पर संपर्क होता है। मिलने से स्फूर्ति आ सकती है, न मिलने से सुस्ती आ सकती है। मर्यादा महोत्सव के अवसर पर साधु-साध्वियों का आचार्य से मिलना होता है। इससे उन्हें प्रेरणा प्राप्त होती है, स्फूर्ति का संचार होता है। परस्पर का मिलन भी अपने आप में प्रशस्त उपक्रम है। अच्छे उद्देश्य के साथ होने वाला मिलन निष्पत्तिकारक होता है।
- तेरापंथी सभा साधु-साध्वियों से कुछ निकटता से जुड़ी हुई संस्था है। साधु-साध्वियों का चतुर्मास होता है, यात्रा होती है तो तेरापंथी सभाओं का जिम्मा होता है--चतुर्मास, विहार के संदर्भ में ध्यान देना, साधु-साध्वियों की समीचीन सेवा-उपासना करना। तेरापंथी सभाओं में भी जागरूकता देखने को मिलती है। ये अपने-अपने क्षेत्रों में कार्य करती हैं, धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों का संचालन करती हैं और समाज हित पर ध्यान भी देती हैं।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

- तेरापंथी सभा के पदाधिकारी केवल पदाधिकारी न रहें, उनमें श्रावकत्व भी होना चाहिए। वे श्रावक कार्यकर्ता बनें। वे सामायिक करने वाले हों, साधु-साध्वियों के दर्शन करने वाले हों, तेरापंथ की रीति-नीति के बारे में जानने वाले हों। इस प्रकार कार्यकर्ताओं में श्रावकत्व होना चाहिए। श्रावकत्व और कार्यकर्तृत्व--दोनों होता है तो अपने आप में यह एक विशिष्ट बात हो जाती है।

प्रतिनिधि सम्मेलन के विभिन्न सत्रों की रिपोर्ट पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

## आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष : निर्धारित परियोजना

आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष के संदर्भ में मुख्यतया दो आध्यात्मिक कार्य किए जाएं--

१. जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में धर्मसंघ में सौ मुनि दीक्षाएं हों, ऐसा प्रयास किया जाए। इस हेतु साधु-साध्वियों और समणश्रेणी का प्रत्येक सिंघाड़ा और वर्ग दो-दो दीक्षार्थियों को तैयार करने का प्रयास करे।
२. अधिकाधिक लोगों को समझाकर अणुव्रती (ग्यारह सूत्रें को स्वीकार करने वाले) बनाने का प्रयत्न किया जाए। इस कार्य की अवधि वि.सं. २०६९ की कार्तिक शुक्ला द्वितीया से वि.सं. २०७१ की कार्तिक शुक्ला द्वितीया तदनुसार १५ नवम्बर २०१२ से २५ अक्टूबर २०१४ तक रहे।

## आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- चि. युगम (सुपौत्र-संघसेवी श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री भूरामल-सुशीलादेवी, सुपुत्र नवीन-वर्षा श्यामसुखा, श्रीडूंगरगढ़-इन्दोर) के शुभ जन्म के उपलक्ष्य में श्री बुधमल, गुलाबचन्द, हनुमानमल श्यामसुखा, कोलकाता-गुवाहाटी-मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

३१००/- श्रीमती कंचनदेवी सुराणा (धर्मपत्नी-श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व.कुन्दनमलजी सुराणा, तारानगर-कोलकाता) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू राजेन्द्र-मंजू, शीतल-पुष्पा, बाबूलाल-स्नेहलता, सुरेश-सरोज, सुशील-सुनीता, जगत-अंजु, जयसिंह-नीरज सुराणा द्वारा प्रदत्त।

३१००/- स्व. श्रीमती पारूदेवी बुच्चा (धर्मपत्नी-स्व.सिरेमलजी बुच्चा, जोरावरपुरा) के प्रभावक संथारे के उपलक्ष्य में श्री घेवरचन्द, उत्तमचन्द, इन्द्रचन्द, गौतमचन्द, फतेहचन्द, शांतिलाल एवं समस्त बुच्चा परिवार, जोरावरपुरा-नोखा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. मन्नालाल फूलफगर (सुपुत्र-स्व.बस्तीमलजी फूलफगर, सुजानगढ़) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शांतिदेवी फूलफगर, हैदराबाद, अनुज हंसराज, पूनमचन्द फूलफगर, सुपुत्री नीता, प्रेम, संगीता, सरला, चित्रा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती प्रमिलादेवी चपलोत (धर्मपत्नी-श्री शंकरलालजी चपलोत, आमली-अहमदाबाद) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र दिलीप, संजय, विनय, पंकज, राजेश, कल्पेश, आशुतोष, वंश एवं सुपौत्र चिन्मय, संयम, जीनीत, सोनू चपलोत द्वारा प्रदत्त।

**पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता--**

**केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति,**
**पो. जसोल-३४४०२४ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ९६८००५५३८१, ९३५२४०४६४१**

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

**प्रकाशन दिनांक : ४-८-२०१२**

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**